



चीकू और चिकूटिचू

कहानी - एस्थर डेविड

चीकू को अपने घर के पासवाले पार्क में गिलहरियों को देखना अच्छा लगता था। जब वह अपने दोस्तों के साथ खेलते हुए थक जाता, तब वह घास पर लेट जाता और गिलहरियों को देखता रहता। वह हमेशा अपनी जेब में मूंगफली के दाने रखता और इस आशा में कुछ दाने वह ज़मीन पर बिखेर देता कि गिलहरियाँ नीचे आकर उन्हें खाएंगी।

वे बिलकुल वैसा ही करतीं। चीकू ने ध्यान दिया कि उनमें से एक मोटी गिलहरी औरों से कुछ ज़्यादा साहसी थी। वह अक्सर उसके करीब आ जाया करती थी और बड़ी तेज़ी से मूंगफली का एक दाना मुँह में भर कर पेड़ पर वापस चढ़ जाती थी। धीरे-धीरे वह चीकू को पहचानने लगी और अब हर शाम जब वह चीकू को देखती तो 'चिकूटिचू' की तेज़ आवाज़ निकालकर उसे पुकारती। धीरे-धीरे वह चीकू की हथेली से भी मूंगफली के दाने उठाना सीख गई।

चीकू ने उसका नाम रखा चिकूटिचू। यह चीकू और चिकूटिचू के बीच एक लंबी दोस्ती की शुरुआत थी। चीकू हमेशा चिकूटिचू को पहचान लेता था क्योंकि उसके कान पार्क की अन्य तीन धारीवाली गिलहरियों से अधिक गाढ़े थे।

एक दिन जब चीकू आंगन साफ़ करने में बा की मदद कर रहा था, उसने देखा चिकूटिचू छज्जे पर बैठी उसे ही बुला रही थी। खुशी और अचरज में पड़ा चीकू बा से बोला, “देखो चिकूटिचू हमारे घर पर आ गयी!” बा ने मुस्कराते हुए कहा, “शायद वह गंदगी निकालने वाले पाइप से चढ़ कर छत पर आ गयी।” जब बा यह कह रही थीं तभी चिकूटिचू आंगन में कूदी और रोटी के कुछ छोटे टुकड़े खाकर पार्क में भाग खड़ी हुई। चीकू ने बा से उत्तेजित होते हुए कहा, “मैं कितना खुश हूँ कि चिकूटिचू मुझसे मिलने आई!” बा ने एक क्षण के लिए सोचा और फिर उत्तर देते हुए बोलीं, “उसका घर में आना तभी तक ठीक है जब तक कि वह घर में अपना घोंसला नहीं बनाती।” शीघ्र ही बा चिकूटिचू के बारे में भूल गई, लेकिन चीकू उदास हो गया क्योंकि उसने पिछले कुछ दिनों से उसे पार्क में नहीं देखा था। तभी एक दिन चीकू ने अपने कमरे का दरवाज़ा खोला और खड़खड़ाहट सुनी।





डरे हुए चीकूने दरवाज़ा तुरंत बंद कर दिया और बा को पुकारा। उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और कहा, “आओ तुम्हारे कमरे में देखें, शायद केवल मधुमक्खी हो।” बा ने दरवाज़ा खोला और खिड़की के पर्दे के पीछे गिलहरी की परछाईं देखी। गिलहरी पीछे से मुँह निकाले झाँक रही थी कि क्या हो रहा है। चीकूने उसे पहचान लिया और खुशी से उछलने लगा, “ओह, यह तो मेरी चिकूटिचू है।” लेकिन चिकूटिचू डर गई थी और कमरे से बाहर भाग निकली। बा ने पर्दे को उठाया और चीकू को बताया, “चिकूटिचू ने दरवाज़े के ऊपर एक आले में अपना घोंसला बना लिया है।” उन्होंने चीकू से कहा कि वह कुर्सी पर चढ़कर घोंसले को नीचे उतार ले।

घोंसला बड़े आकार का एक गोला था जिसे गिलहरी ने नारियल के रेशों और चिथड़ों से बुन कर बनाया था, लेकिन वह खाली था। बा ने उसे उठा लिया और चीकू के साथ पार्क में गईं और उसके बाद बा ने घोंसले को एक पेड़ के नज़दीक छोड़ दिया। वे एक पेड़ के पीछे छिप गए और देखने लगे कि चिकूटिचू ने कैसे अपने घोंसले को मुँह से उठाया और पेड़ की एक डाली पर ले जाकर रख दिया।

दो हफ़्ते बाद चीकूदोबारा पार्क में चिकूटिचू को खोजने गया। इस बार वह अकेली नहीं थी बल्कि उसके साथ दो छोटी-छोटी बच्ची गिलहरियाँ भी थीं! बा ने मूंगफली से भरा एक झोला चीकू को देते हुए कहा, “हो सकता है कि चिकूटिचू के पास ज्वार के दाने से भी छोटा दिमाग हो, लेकिन इसकी याददाश्त तो हाथी जैसी है!”

समाप्त



© BookBox. All Rights Reserved.
www.bookbox.com

Click below to follow us:



YouTube

facebook